पाठ का सारांश

विनोद रस्तोगी द्वारा रचित एकांकी 'बहू की विदा' में दहेज़ की समस्या का बेहद कथात्मक शैली में वर्णन किया है | यह एकांकी ऐसे लोगों पर व्यंग्य करती है जो बहू और बेटी में अंतर करते हैं | जिन्हें बेटी का दर्द तो समझ में आता है लेकिन उसी पीड़ा से गुजरती हुई बहू का दर्द कुछ नहीं लगता | ऐसे लोग बहू और बेटी को एक मानने का दावा तो करते हैं लेकिन एक जैसी परिस्थिति में भी बेटी और बहू के साथ किए गए व्यवहार में अंतर स्पष्ट दिखाई देता है |

एकांकी में एक धनी व्यापारी जीवनलाल के पुत्र की शादी कमला नाम की लड़की से हुई है | शादी के बाद जब कमला का भाई मोहन उसे विदा कराने आता है तो जीवनलाल उसे विदा करने से मना कर देते हैं और कहते हैं कि शादी में उनकी हैसियत के अनुरूप उनकी और उनके रिश्तेदारों की खातिर नहीं की गई और ना ही अब तक पूरा दहेज़ दिया गया है इसलिए अगर अपनी बहन को विदा करवा कर ले जाना चाहते हो तो पहले बाकी का बचा हुआ पाँच हजार रुपया दो तभी तुम्हारी बहन की विदा होगी |

जीवनलाल की पत्नी राजेश्वरी बहुत नेक और भली महिला हैं | वे अपने पति जीवनलाल के विचारों से सहमत नहीं हैं और चाहती हैं कि उनकी बहू अपने

भाई के साथ ख़ुशी ख़ुशी विदा हो इसलिए वे अपनी बहू के भाई को बुलाकर पाँच हज़ार रूपए देने का प्रस्ताव रखती हैं और कहती हैं कि ये उनके पति को देकर कमला को विदा करवा कर ले जाए |

दूसरी तरफ जीवनलाल का पुत्र रमेश भी अपनी बहन गौरी को विदा कराने उसके ससुराल गया है और वह खाली हाथ ही लौट आता है | जीवनलाल के पूछने पर पता चलता है कि उसकी बेटी के ससुराल वालों ने उसे रमेश के साथ नहीं भेजा क्योंकि उन्हें लगता है कि उन्हें उतना दहेज़ नहीं मिला जितना उन्होंने सोचा था | यह सुनकर जीवनलाल दंग रह जाते हैं और कहते हैं कि चाहे जीवनभर की कमाई लुटा दो पर ससुराल वालों का पेट नहीं भरता | इस घटना से जीवनलाल की आँखें खुल जाती हैं और वह ख़ुशी ख़ुशी अपनी बहू को उसके भाई के साथ विदा कर देते हैं |